अगर लोग आपको जान लें, तो आपसे मोहब्बत करने लगें

संकलन:

ख़ालिद अल-ख़िलीवी

अगर लोग आपको जान लें, तो आपसे मोहब्बत करने लगें

संकलन:

ख़ालिद अल-ख़िलीवी

1443 हिजरी, 2022 ई०

डिपोज़िट संख्या : ... /1443 हिजरी

आईएसबीएन : 978-603-02-6219-9

प्रथम संस्करण : 1443 हिजरी, 2022 ई०

प्रथम संस्करण

प्रकाशन के अधिकार सुरक्षित हैं

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام جمعية الربوة رواد الترجمة المحتوى الإسلامي

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع
الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900
ceo@rabwah.sa
P.O.BOX: 29465
RIYADH: 11557
www.islamhouse.com

प्रिय पाठक! आपका स्वागत है!

मैं महान अल्लाह -जिसने आकाशों तथा धरती को बनाया है- से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको एवं आपके सभी चाहने वालों को ख़ुश रखे तथा स्वस्थ रखे और जब आपको यह पुस्तिका मिले, तो आप अच्छे, स्वस्थ और सुरक्षित हों।

...

मैंने पैगंबर मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सम्पूर्ण जीवनी दर्जनों बार पढ़ी है।

इसी तरह मैंने पूरा क़ुरआन, जो अल्लाह ने उनपर उतारा है, सैकड़ों बार पढ़ा है।

मैंने पाया है कि हृदय इस नबी से मुहब्बत किए बग़ैर, उनकी जीवनी से संतुष्ट एवं ईमानदारी से आश्वस्त हुए बग़ैर नहीं रह सकता है।

फिर मैंने इस जीवनी को पढ़कर आपके लिए कुछ सुंदर बातों का चयन किया है।

संभवतः यह आपको पसंद आएँ, इस दुनिया में आपके लिए मार्गदर्शक बनें, आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें, आपका हृदय इनसे संतुष्ट हो जाए एवं आप ख़ुशी महसूस करें।

आपका भाई: ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह

- जब अल्लाह ने मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को उनके समुदाय की ओर नबी बनाकर भेजा, तो इसका सबसे बड़ा उद्देश्य था लोगों को केवल एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाना और उस मार्ग पर चलाना, जिसे अल्लाह ने लोगों के लिए चुना है। क्योंकि अल्लाह ही ने लोगों को पैदा किया है तथा वही जानता है कि उनके लिए क्या अच्छा है। नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम- इस मामले में पहले आने वाले नबियों -उनपर अल्लाह की शांति हो- की तरह ही हैं।

आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- कोई समाज सुधारक या बुद्धिमान विचारक नहीं थे, बल्कि आप अल्लाह की ओर से भेजे गए एक रसूल थे, जो महान एवं उच्च अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) के अनुसार चलते थे।

...

- प्राचीन युग में एक आदमी से पूछा गया : तुम नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर ईमान क्यों लाए, तो उसने बहुत सुंदर उत्तर दिया। उसने कहा : मैंने उनको पाया कि वह किसी ऐसी चीज़ का आदेश नहीं देते हैं, जिससे मानव विवेक रोके, तथा किसी ऐसी चीज़ से नहीं रोकते हैं, जिसे मानव विवेक करने का आदेश दे।

इस आधार पर, मैं इस पुस्तिका के अंत में संपर्क और प्रश्न के लिए एक लिंक भी दूँगा।

...

- अल्लाह ने आपको सभी इंसानों की ओर नबी बनाकर भेजा। आप अंतिम नबी थे। इसलिए आपका चमत्कार क़यामत तक बाक़ी रहेगा। वह चमत्कार है, यह क़ुरआन, जिसके द्वारा अल्लाह ने अरब के भाषाविदों को चुनौती पेश की कि वे उसकी तरह कोई किताब, या दस सूरतें या कम से कम एक सूरा ही ले आएँ। परन्तु वे असमर्थ रहे। यह चुनौती आज तक क़ायम है।

...

- अल्लाह ने क़ुरआन को चौदह सौ साल पूर्व उतारा और हर गुज़रते दिन एवं बढ़ते वैज्ञानिक विकास तथा खोज के साथ इस चमत्कार की महानता एवं मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के संदेश की सच्चाई ही साबित हुई है।[1]

...

- नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की दावत अर्थात आह्वान कोई ऐसा दर्शन नहीं था, जिसको समझना या लागू करना लोगों के लिए मुश्किल हो। बल्कि यह स्पष्ट एवं सरल था, जिसे हर पढ़ा लिखा एवं अनपढ़ व्यक्ति समझ सकता है। यह आसानी एवं क्षमता पर आधारित है।

ऐसा भी नहीं है कि इस्लाम धर्म एक क्षेत्र विशेष के लिए है एवं दूसरे क्षेत्र के लिए नहीं, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र के लिए एक सम्पूर्ण संविधान है। उच्च एवं महान अल्लाह ने खुद क़ुरआन के अंदर क़ुरआन के विषय में कहा है : "इस क़ुरआन को रमज़ान के महीने में उतारा गया है। यह लोगों को सुपथ दिखाने वाला है।" [सूरा अल-बक़रा : 185] तथा सूरा इसरा में कहा है : "वास्तव में, ये क़ुर्आन वह डगर दिखाता है, जो सबसे सीधी है और उन ईमान वालों को शुभ सूचना देता है, जो सदाचार करते हैं कि उन्हीं के लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है।" [सूरा अल-इस्रा : 9]

...

- अब्दुल्लाह बिन सलाम -अल्लाह उनसे राज़ी हो-, जो पहले यहूदी थे और बाद में मुसलमान हो गए, कहते हैं : मैं उन लोगों के साथ था, जो मदीने में अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के मदीना आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब मेरी नज़र उनके चेहरे पर पड़ी, तो मैं जान गया कि उनका चेहरा किसी झूठे का चेहरा नहीं है। सबसे पहली बात जो मैंने उनको कहते हुए सुनी, यह थी : "ऐ लोगो! सलाम फैलाओ,

[1] अधिक विस्तार के लिए यूट्यूब पर "क़ुरआन का बड़ा चमत्कार" के विषय पर डा० जाकिर नायक के व्याख्यान और बहस को देखा जा सकता है।

रिश्तों-नातों का ख़याल रखो, लोगों को खाना खिलाओ और रात में जब लोग सो रहे हों तो उठकर नमाज़ पढ़ो, (इसके फलस्वरूप) तुम सुरक्षित रूप से जन्नत में प्रवेश पा जाओगे।"

...

- अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- 40 वर्षों तक अपने समुदाय के साथ मक्का में रहे। मक्का वाले उन्हें स़ादिक़ (सच्चा) एवं अमीन (अमानतदार) कहकर पुकारते थे। जब वे यात्रा में निकलते, तो अपनी अमानतें उनके पास रख देते थे।

अल्लाह ने जब उन्हें रसूल के तौर पर चुना और वह लोगों को एक अल्लाह की इबादत करने तथा हराम, व्यभिचार, अन्याय और गैर क़ानूनी हत्या से दूर रहने की ओर बुलाने लगे, तो उनमें से बहुतों ने उनसे दुश्मनी कर ली। परन्तु अंजाम असत्य पर सत्य की जीत के तौर पर सामने आया। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "मोमिनों की सहायता करना हम पर अनिवार्य है।" [सूरा अल-रूम : 47]

उन लोगों के पास बहुत बड़ा अवसर था कि वे सत्य की ओर बुलाने वाले नबी की मदद करते! परन्तु उन लोगों ने घमंड किया तथा मुँह फेर लिया। अंततः घाटे में रहे।

...

- हमारे नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि आप निकटवर्ती या दूर वाले, छोटे या बड़े, सबके साथ इंसाफ़ करने के लिए जाने जाते थे। आप किसी भी आदमी पर ज़ुल्म करने को हराम करार देते थे, चाहे एक रुपया के द्वारा ही क्यों न हो। आपने कहा है : "अत्याचार से बचो, क्योंकि अत्याचार क़यामत के दिन अंधकार का कारण होगा।" उन्होंने यह भी कहा है : "यदि मुहम्मद की बेटी (मेरी बेटी) फ़ातिमा भी चोरी करती, तो मैं उसका हाथ काट देता।"

...

- आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- लोगों को बताते थे कि अल्लाह के निकट पैमाना धन की बहुतायत, न ही बुद्धि की प्रचुरता और न ही व्यापक सामाजिक संबंध है। बल्कि, यह मापदंड हृदय की पवित्रता, विश्वास (ईमान) की महानता, नैतिकता की सुंदरता, अच्छे व्यवहार, वाणी की सत्यता और अच्छे कर्म करने का है। आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "किसी अरबी को किसी गैर अरबी पर और किसी गैर अरबी को किसी अरबी पर, किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरे पर कोई वरीयता प्राप्त नहीं है। अगर वरीयता प्राप्त है, तो धर्मनिष्ठा एवं परहेज़गारी की बुनियाद पर।" खुद अल्लाह ने अपनी किताब में कहा है : "अल्लाह के निकट तुम्हारे अंदर सबसे अधिक प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति वह है, जो सबसे अधिक तक़वा वाला हो।" [सूरा अल-हुजुरात : 13]

इससे बढ़कर घिनौना अत्याचार और क्या होगा कि किसी व्यक्ति को उसके चेहरे के रंग, नाम, उसके माता-पिता के धर्म, उसकी नागरिकता मात्र या ऐसी चीज़ की बुनियाद पर मापा जाए, जो उसके हाथ में नहीं है। वह तो सर्वज्ञानी एवं कृपावान अल्लाह की सृष्टि है।

...

- पैगंबर -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- वैवाहिक संबंधों को इतना महत्व देते थे कि आपने, वह मूल स्तंभ जिसपर अनिवार्य रूप से परिवार की नींव रखी जानी चाहिए, शरई विवाह को क़रार दिया। इसलिए कि यही वह मज़बूत बुनियाद है, जिसपर ऊँची इमारत खड़ी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आपने सभी दरवाज़ों को बंद कर दिया, जिनकी मुसीबतों एवं शारीरिक तथा मानसिक रोगों से दुनिया आज तक जूझ रही है।

आप इस मामला में लोगों के लिए एक बेहतरीन आदर्श हैं। आपने कहा है : "तुममें से सबसे बेहतर व्यक्ति वह है, जो अपने परिवार के लिए बेहतर है और मैं अपने परिवार के लिए तुममें सबसे बेहतर हूँ।"

विवाह नाम है मुहब्बत, दया, सहयोग, पवित्रता, सत्यता एवं प्रशिक्षण का। यह सब, उम्मत में एक नेक परिवार का सृजन करने के लिए है।

...

- सबसे पहले कर्तव्यों में से जिनका अल्लाह ने अपने नबी को आदेश दिया था, एक कर्तव्य नमाज़ पढ़ना है। दिन-रात में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हैं, जिनका मस्जिद में जमात के साथ पढ़ना ज़रूरी है। जहाँ तक औरतों की बात है, तो उनके लिए घरों में नमाज़ पढ़ना ही उत्तम एवं सुविधाजनक है।

नमाज़ नाम है महान अल्लाह का सम्मान करने, अधिक से अधिक उसको याद करने, उसकी प्रशंसा करने एवं इंसान को इस दुनिया में जिसकी भी ज़रूरत हो, उसे उससे मांगने का। क्योंकि वही उसका रब है, जिसने उसे पैदा किया है एवं उसकी जीविका की गारंटी ली है।

नमाज़ से पहले वज़ू करना आवश्यक है। वज़ू खुले रहने वाले अंगों को धोने का नाम है (जैसे - चेहरा, कोहनी समेत दोनों हाथों को धोना, सर का मसह करना एवं टखनों समेत दोनों पैरों को धोना।)

यह आदेश इसलिए है कि आदमी दोनों पवित्रता को जमा कर ले। वज़ू द्वारा बाहरी पवित्रता एवं नमाज़ द्वारा हृदय तथा आत्मा की पवित्रता।

तनिक उस व्यक्ति की स्वच्छता की कल्पना करें जो इन समयों में हर दिन अपने आपको धोता है कि उसकी स्वच्छता एवं पवित्रता कैसी होगी?!

...

नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अत्यंत सुंदर छवि और अद्भुत जीवन के मालिक थे। अतः मैंने आपकी जीवनी से बहुत सारी बातें सीखी हैं। उनमें से कुछ बातें इस प्रकार हैं :

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा है कि

अल्लाह ने लोगों को आज़ाद पैदा किया है। मगर यह आज़ादी बेलगाम नहीं है। यदि यह आज़ादी आपको या किसी दूसरे को शारीरिक या मानसिक तौर पर कष्ट पहुँचाने लगे, तो आपकी आज़ादी की सीमा वहीं ख़त्म हो जाती है।

आपकी आज़ादी का अर्थ यह नहीं है कि जब आप ग़लती पर हों, तो उस समय भी आपको कोई उपदेश नहीं दे सकता है। ध्यान रहे कि एक समृद्ध जीवन सहयोग, नसीहत एवं मुहब्बत पर ही आधारित है।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

पड़ोसियों के अधिकारों की सुरक्षा करूँ, उनके साथ अच्छा व्यवहार करूँ, वे मेरी ओर से कष्ट एवं नुक़्सान पहुँचने से सुरक्षित रहें और मैं जब-तब उनके साथ खाने का आदान-प्रदान करूँ, ताकि आपस में मुहब्बत बढ़े एवं आत्मीयता परवान चढ़े।

आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "जिबरील (अलैहिस्सलाम) मुझे बराबर पड़ोसी के बारे में ताकीद करते रहे, यहाँ तक कि मुझे लगने लगा कि वह उसे वारिस बना देंगे।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

मैं बाहरी रूप से साफ कपड़े और सुंदर इत्र के द्वारा खुद को ख़ूबसूरत बनाऊँ एवं अंदर से भी सुंदरता अपनाऊँ। अतः अच्छी नीयत रखूँ, दूसरों की भलाई के बारे में सोचूँ, उनकी सफलता पर ख़ूश होऊँ एवं उनके लिए वही पसंद करूँ, जो अपने लिए पसंद

करूँ। आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "अल्लाह सुन्दर है एवं सुन्दरता को पसंद करता है।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

सुन्दरता, नंगेपन की तुलना में, पर्दे से अधिक झलकती है। जब भी इंसान और विशेषकर औरतें पर्दे में होती हैं, तो वह अधिक सुन्दर एवं ख़ूबसूरत लगती हैं। जब भी नंगापन बढ़ता है, तो बदसूरती एवं मुसीबतें ज़्यादा होने लगती हैं।

यदि इंसान अपने असली स्वभाव की ओर लौट आए, तो जान जाएगा कि पर्दा को पसंद करना एवं नंगापन से दूर भागना उसके मूल स्वभाव में दाखिल है।

आप इसको उस समय आसानी से जान जाएंगे, जब आप तुलना करेंगे उन देशों में होने वाले अपराधों की, जिनमें नंगापन आम है, उन देशों के साथ, जो नंगेपन की अनुमति नहीं देते हैं। ऐसा करने से आपके सामने वास्तविकता खुलकर आ जाएगी।

महान एवं उच्च अल्लाह ने सूरा अल-आराफ़ में कहा है : "हे आदम की संतान, हमने तुमपर ऐसा वस्त्र उतारा है, जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाता है, तथा वह शोभा है, एवं धर्मनिष्ठा का वस्त्र ही सबसे अच्छा वस्त्र है।" [सूरा अल-आराफ़ : 26]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

मैं बच्चों से प्यार करूँ, उनपर दया करूँ, उनके लिए नम्रता धारण करूँ, उनके संबंध में धैर्य रखूँ, उनकी तरबियत के लिए प्रयासरत रहूँ, ताकि वे अपने समाज के सफल व्यक्ति साबित हों।

जो लोग उनपर रहम नहीं करते, बल्कि उनको प्रताड़ित करते हैं, जैसा कि जंगों इत्यादि में होता है, वे अल्लाह की रहमत से वंचित रहते हैं तथा उनको दुनिया एवं आख़िरत में कष्टदायक सज़ा की धमकी दी गई है।

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने कहा है : "जो हमारे छोटों पर दया न करे और हमारे बड़ों का सम्मान न जाने, वह हममें से नहीं है।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

मेरे शरीर का भी मुझपर अधिकार है, जैसे उसको लाभदायक तथा हलाल खाना खिलाना और हर उस निवाला से दूर रहना, जो हराम स्रोत से आया हो या ऐसे खाने से दूर रहना, जो मेरे शरीर को वर्तमान या भविष्य में नुक़सान पहुँचाए। नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "हर वह मांस, जो हराम माल से तैयार हुआ हो, आग उसका अधिक हकदार है।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा है कि

शरीर एवं वस्त्र के पाक व साफ़ होने से पूर्व मेरी ज़ुबान तथा हृदय साफ़-सुथरे हों, ताकि मेरे लिए दोनों प्रकार की सुन्दरता इकट्ठी हो जाए।

क्योंकि जो पाक अल्लाह चाहता है कि तुम बाहरी तौर पर सुन्दर दिखो, वही पाक अल्लाह यह भी चाहता है कि तुम अंदरूनी तौर पर भी साफ़ व सुन्दर हो जाओ।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।" [सूरा अल-बक़रा: 222]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

इंसान को अपनी पत्नी के साथ सहवास करने के बाद अनिवार्य रूप से नहाना चाहिए, ताकि वह पवित्र और चुस्त रहे। जो इस चीज़ को आज़माएगा, वह इस धार्मिक विधान की सुन्दरता को जान जाएगा।

यही आदेश मासिक धर्म वाली औरत के लिए है। जब वह पाक हो जाए, तो उसपर नहाना वाजिब है तथा उससे पहले भी नहाते रहना उसके लिए मुस्तहब (अच्छा) है।

यह सारे आदेश इसलिए हैं कि इन्सान पाक रहे और शारीरिक एवं मानसिक उत्तम परिणामों का लाभ उठाए।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

अल्लाह तआला के निकट माता-पिता का अधिकार बहुत बड़ा है। लोगों में माता-पिता ही सबसे अधिक अच्छे व्यवहार, अच्छी संगति तथा धैर्यपूर्ण आचरण के हक़दार हैं।

अल्लाह तआला ने उनकी ख़ुशी में अपनी ख़ुशी एवं उनकी नाराज़गी में अपनी नाराज़गी रखी है। आज दुनिया में माता-पिता के अधिकारों का जो बड़े पैमाने पर हनन हो रहा है, उनसे आपको सबक़ हासिल करना चाहिए। आज आप औलाद के अपने माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार की ऐसी-ऐसी बातें सुनेंगे कि विश्वास करना मुश्किल हो जाएगा। जबकि अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े गुनाहों के बारे में नहीं बताऊँ? हम लोगों ने कहा : क्यों नहीं हे अल्लाह के रसूल! आपने फरमाया : (तो सुनो) अल्लाह के साथ शिर्क करना और माता-पिता की अवज्ञा करना। आप टेक लगाकर बैठे हुए थे। लेकिन उठकर सीधा होकर

बैठ गए और फरमाया : तथा आगाह हो जाओ, झूठी बात कहना एवं झूठी गवाही देना! खबरदार हो जाओ, झूठी बात कहना एवं झूठी गवाही देना! आप इस बात को इतनी बार दोहराते रहे कि हमें लगा कि आप चुप नहीं होंगे।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

माता-पिता के कंधे पर, औलाद बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

अल्लाह क़यामत के दिन माता-पिता से उनके संबंध में प्रश्न करेगा। माँ-बाप पर वाजिब है कि वे अपनी औलाद के साथ नरमी से पेश आएं, उनको अच्छी तरबियत दें और खुद उनके लिए रोल मॉडल बनें।

औलाद के साथ माँ-बाप का रिश्ता कभी ख़त्म नहीं होता है। यह रिश्ता जीवन के अंत तक क़ायम रहता है। (यह संबंध) वैसा नहीं होना चाहिए, जैसा कि दुनिया के बहुत सारे देशों में होता है कि 18 वर्षों के बाद बच्चों को घर से निकाल दिया जाता है। उनके बीच वास्तविक रिश्ता टूट जाता है। जिसके नतीजे में बर्बादी और बिगाड़ जन्म लेती है, जिसकी पुष्टि बहुत सारे देशों के सरकारी आंकड़े करते हैं।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

मैं बीमार को देखने जाऊँ, उनके लिए दुआ करूँ, उनके हृदय को प्रसन्न करने का प्रयास करूँ और इलाज में उनकी मदद करूँ, यद्यपि वह उनमें से न हो, जिनको मैं जानता हूँ। अल्लाह अपने बन्दों से यह चाहता है कि वे उसके बन्दों का भला करें। उसने कहा है : "उपकार का बदला उपकार ही है।" [सूरा अल-रहमान : 60]

दूसरों के साथ भलाई करने के कारण भलाई करने वाले के हृदय में असीम सुख एवं आनंद का संचार होता है।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

मैं अपनी ज़ुबान या हाथ से किसी को नुक़सान न पहुँचाऊँ, चाहे वह कोई जानवर ही क्यों न हों। आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने मुझे बताया है कि एक महिला को इसलिए सज़ा हुई, क्योंकि उसने एक बिल्ली को बाँध कर रखा था। न उसको खुद खाना दिया और न ही उसे छोड़ा कि वह धरती की चीज़ों को खाए। बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समस्त सृष्टि के साथ उपकार करने का आदेश दिया है, चाहे वह इंसान हो, जानवर हो या पेड़-पौधा। आपने फरमाया है : "अल्लाह ने प्रत्येक चीज़ में एहसान (उपकार) को अनिवार्य करार दिया है।" तथा अल्लाह तआला ने कहा है : "और भलाई करो, अल्लाह भलाई करने वालों को पसंद करता है।" [सूरा अल-बक़रा : 195] इसी तरह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने कहा है : "धरती पर बिगाड़ पैदा न करो।" [सूरा अल-बक़रा : 11] एक अन्य स्थान में कहा है : "और धरती पर उसके सुधार के बाद, फ़साद न फैलाओ।" [सूरा अल-आराफ़ : 56]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

सभी नबी भाई-भाई हैं और वे एक ही समान चीज़ की तरफ लोगों को बुलाते थे। सारे नबी अल्लाह को एक जानने और मानने का आह्वान करते थे एवं नैतिक आदर्शों, जैसे- सत्य, न्याय, अमानत, दान, भलाई के कामों में सहयोग को लाज़िम पकड़ने और झूठ, अत्याचार, धोखा, ख़यानत, व्यभिचार, शराब एवं सोचने-समझने की क्षमता को प्रभावित करने वाली तमाम चीज़ों से दूर रहने की शिक्षा देते थे।

उनके दरमियान भिन्नता केवल इबादत, जैसे नमाज़ और रोज़े आदि के तौर-तरीकों में थी। सबसे पहले नबी आदम -अलैहिस्सलाम- थे एवं सबसे अंतिम नबी व रसूल मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- हैं।

ईसा -अलैहिस्सलाम- भी अल्लाह के बन्दे एवं उसके रसूल थे। अल्लाह ने उनको एवं उनकी माता मर्यम -अलैहस्सलाम- को अनेक प्रकार केलचमत्कार प्रदान किए थे।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में 25 बार ईसा -अलैहिस्सलाम- का उल्लेख किया है। उनकी माँ मर्यम अलैहस्सलाम के नाम से क़ुरआन में एक पूरी सूरा ही मौजूद है।

मैं ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा है कि सभी नबियों से प्यार करूँ, क्योंकि वे अल्लाह के निकट सृष्टियों में सबसे अच्छे हैं।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

मैं किसी का उसके रूप, नागरिकता, उसके बात करने के अंदाज़ या उसकी चाल-ढ़ाल के कारण मज़ाक़ न उड़ाऊँ। हो सकता है वह अल्लाह के निकट मज़ाक़ उड़ाने वाले से बेहतर हो और हो सकता है कि उसके बुरे दिन गुज़र जाएं एवं स्थिति बदल जाए। आपको अधिक से अधिक अल्लाह की प्रशंसा करनी चाहिए एवं उसका धन्यवाद करते रहना चाहिए।

अल्लाह तआला ने सूरा हुजुरात में कहा है : "हे ईमान वालों, तुममें से कोई समुदाय किसी समुदाय का मज़ाक़ न उड़ाए। हो सकता है वह उससे अच्छा हो, एवं औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ न उड़ाएँ। हो सकता है वे उनसे अच्छी हों।" [सूरा अल-हुजुरात : 11]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

इंसान कभी न कभी अवश्य भूल करता है। इसलिए उस पर वाजिब है कि वह जितनी जल्दी हो सके, अपनी ग़लती को स्वीकार करे, तौबा करे एवं हर संभव अपनी ग़लती को सुधारने की कोशिश करे। सत्य की ओर लौटना असत्य पर अड़े रहने से बेहतर है। नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "आदम की प्रत्येक संतान ग़लती करती है और ग़लती करने वालों में सबसे उत्तम लोग वह हैं, जो अत्यधिक तौबा करने वाले हों।"

तथा (मैंने सीखा कि) ग़लती यदि अल्लाह के हक़ में हो, तो तौबा करूँ, माफ़ी चाहूँ और अपने रब से क्षमा करने एवं दर-गुज़र करने की भीख मांगूँ।

लेकिन ग़लती यदि बन्दे के हक़ में हो, तो उससे माफ़ी माँगूँ और बिना कुछ कमी किए उसका अधिकर उसको लौटा दूँ।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

जीवन परिवार के बीच सहयोग और समन्वय पर आधारित होना चाहिए। यदि कोई सही कर रहा है, तो आप उसको धन्यवाद दें, उसकी हिम्मत बढ़ाएं और यदि कोई ग़लती कर रहा है, तो उसको सही मार्ग दिखाएं तथा उसे सिखाएं। क्योंकि इंसान अकेला बहुत कमज़ोर है और अपने भाइयों के साथ मिल कर मज़बूत हो जाता है। अल्लाह तआला ने कहा है : "तथा आपस में नेकी एवं संयमता में सहयोग करते रहो और बुराई एवं अत्याचार में सहयोग न करो।" [सूरा अल-माइदा : 2] जबकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : "धर्म ख़ैरख़्वाही (एक-दूसरे का हित चाहने) का नाम है।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

उपहार भले ही छोटा हो, परंतु प्यार बढ़ाता है। इससे सुन्दर और क्या बात होगी कि इंसान कभी-कभी अपनी पत्नी, परिवार एवं दोस्तों को उपहार पेश करे. ताकि उनके बीच मुहब्बत एवं अपनापन परवान चढ़े। अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "एक-दूसरे को उपहार दिया करो, इससे तुम्हारा आपसी प्रेम बढ़ेगा।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

शरीर की सफ़ाई ज़रूरी है। किसी भी व्यक्ति के लिए जायज़ नहीं है कि वह 40 दिन से अधिक अपने बगल के बालों, नाखूनों या दूसरी चीज़ों के साफ़ करने में देरी करे। यदि इस अवधि से पहले साफ़ कर ले तो और उत्तम एवं बेहतर है। इन्सान जितना पाक-साफ़ रहेगा, वह अपने लिए एवं दूसरों के लिए उतना ही अधिक स्वीकार्य होगा। अल्लाह तआला ने कहा है : "निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।" [सूरा अल-बक़रा: 222]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि

पूरे रमज़ान महीने का रोज़ा रखूँ, जब तक मैं उसकी क्षमता रखूँ। रमज़ान अरबी नौवां महीना है। इसी महीने में अल्लाह ने नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर क़ुरआन उतारा था। रोज़ा भोर से ले कर सूर्यास्त तक खाने, पीने एवं पत्नी से संभोग करने से दूर रहने का नाम है।

इस रोज़ा में स्वास्थ्य है, आत्मा की पवित्रता है, शरीर की सफ़ाई है, धैर्य का प्रशिक्षण है एवं उन ग़रीबों की भावनाओं का सम्मान है, जिनको पूरे वर्ष (भर पेट) खाना नहीं मिलता है। इसके अलावा भी दूसरे बड़े लाभ हैं।

...

अंत में कहना है कि

ये कुछ ऐसी बातें हैं, जिनको मैंने अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है। उम्मीद है कि अल्लाह इस मीठे नहर एवं सुन्दर बगीचे के संबंध में और लिखने की शक्ति प्रदान करेगा।

निम्न में कुछ वेबसाइट हैं, जिनसे आप लाभ उठा सकते हैं या किसी चीज़ के बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं :

Edialoguec.sa

Slamreligion.com

अधिक जानकारी एवं अपनी भाषा में संदर्भ पुस्तकों के लिए इस वेबसाइट को देख सकते हैं :

Islamhouse.com

हे हमारे रब!

मेरे शब्दों में बरकत दे तथा इन्हें दुनिया व आख़िरत में मेरे एवं मेरे चाहने वालों के लिए रौशनी बना दे। आमीन।